29

पाप का स्व-विनाशकारी स्वभाव

(9:1-11)

बहुत पहले, पौलुस ने घोषणा की थी कि ''पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है'' (रोमियों 6:23क)। परन्तु आज ''पाप'' का अर्थ कई लोगों के लिए वह नहीं रह गया है। विश्व प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कार्ल मैनिंगर ने *वटएवर हैपंड टू सिन?*[1] नामक पुस्तक में ध्यान दिलाया है कि गत पांच या अधिक दशकों में, अधिक गम्भीर माने जाने वाले पापों को लोग ''अपराध'' या ''रोग'' कहने लगे हैं, जबकि कम गम्भीर माने जाने वाले पापों को अब ''बुराई'' ''समाज द्वारा स्वीकार न किया जाने वाला व्यवहार,'' ''असामाजिक प्रवृत्ति,'' ''गलती,'' ''समाज के साथ मिलकर न चल पाना,'' या ''अलग जीवन शैली'' जैसा कोई भी नाम दिया जाता है, पर इसे ''पाप'' नहीं कहा जाता!

यदि पाप की अवधारणा इतनी नापसंद की जाने लगी है, तो संसार ने इस विचार को इससे भी बढ़कर त्याग दिया है कि पापपूर्ण व्यवहार अनर्थकारी परिणाम लाता है! परन्तु परमेश्वर आज भी यही घोषणा करता है कि पापी को उसकी मज़दूरी अर्थात कठोर, मृत्यु का टनकता सिक्का, मिलती है (रोमियों 6:23)। प्रकाशितवाक्य 9 अध्याय से अधिक स्पष्ट कहीं और इस सच्चाई को नहीं बताया गया।

इस समय हम प्रकाशितवाक्य 8 से 11 में सात तुरहियों का अध्ययन कर रहे हैं। पिछले पाठ में हमने प्राकृतिक संसार पर पाप के पड़ने वाले प्रभाव पर ज़ोर देते हुए, पहली चार तुरहियों का अध्ययन किया था। इस पाठ में हम उस प्रभाव पर ध्यान देते हुए जो पाप ने पापी पर डाला है, पांचवीं तुरही का अध्ययन करेंगे (9:1-11)।

''हाऊ सिन हर्ट्स'' नामक एक सरमन में जिम्मी ऐलन ने ध्यान दिलाया है कि पाप शारीरिक रूप से आघात पहुंचाता है, पाप विवेक को भी घायल करता है और पाप को आत्मिक रूप में घायल करता है।[2] अन्यों ने कहा है कि पाप बाहरी, अन्दरूनी और अनन्तकाल के लिए चोट पहुंचाता है। पाप के ये सभी परिणाम वचन के इस भाग में स्पष्ट या परोक्ष रूप में मिल ही जाएंगे।

पाठ (9:4-6, 10)

प्रकाशितवाक्य 9:1-11 को ''पूरी पुस्तक के सबसे रहस्यपूर्ण और डराने वाले दृश्यों में से एक'' का नाम दिया गया है,[3] जबकि इन आयतों वाली टिड्डियों को ''अपोकलिप्स में और अद्‌भुत जीवों में'' के रूप में वर्णित किया गया है।[4]

वचन के हमारे भाग के सनकी विवरणों की चर्चा से कागज़ भरे जा सकते हैं: गिरने वाला तारा किसे कहा गया है? अथाह कुण्ड क्या है? अबद्दोन/अपोलियोन कौन है? ऐसे प्रश्नों से हम जूझते रहेंगे, परन्तु एक बार फिर हमें ज़ोर देना है कि दर्शन का *कुल प्रभाव* सबसे महत्वपूर्ण है। जैसे जिम मैक्गुइगन ने कहा है, हम अक्सर ब्रश को देखते हैं, जबकि देखना हमें तस्वीर को चाहिए।[5]

अध्याय आरम्भ करते हुए पहले पूरे दृश्य को मन में बिठा लें। (अथाह कुण्ड से टिड्डियां का चित्र देख) प्रकाशितवाक्य 9:1-11 बार-बार पढ़ें। पढ़ते हुए, इन मुख्य विचारों पर ध्यान दें: पृथ्वी के कुंडों में से भयंकर जीव निकलते हैं! उनका उद्देश्य मनुष्यों को सताना है (आयतें 4-6, 10)। वे परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों को नहीं, बल्कि केवल अविश्वासियों को हानि पहुंचाते हैं (आयत 4)। यह अन्तिम न्याय नहीं है, क्योंकि यातना एक सीमित समय के लिए है (आयतें 5, 10) और इससे मृत्यु नहीं होती (आयतें 5, 6)। तस्वीर वास्तविक नहीं है: वास्तविक टिड्डियां फसलों को हानि पहुंचाती हैं, पर ये भयानक जीव ऐसा नहीं करते (आयत 4)।

इन आयतों का मुख्य संदेश क्या है? ये आयतें मुहम्मद की टोलियों या नर्व गैस वाले कोबरा हैलीकॉप्टर वाले आक्रमण के विध्वंस जैसी ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण नहीं है।[7] पहली बात तो ऐसी व्याख्याओं का पहली शताब्दी के पाठकों के लिए कोई अर्थ नहीं होगा। दूसरी, मुहम्मद की सेना और कोबरा हैलीकॉप्टर ने लोगों को मारा, परन्तु टिड्डियों ने नहीं।

अधिकतर लेखक किसी न किसी रूप में यह मानते हैं कि टिड्डियां *पाप के सताने वाले स्वभाव* का चित्रण हैं:

> ... हमारे सामने नैतिक और आत्मिकता की स्पष्ट तस्वीर है, जो लोगों के मनों पर कष्ट लाती है। ...
>
> पाप परमेश्वर के नियम को न मानना है और इससे धोखा और मानसिक या आत्मिक सताव आता है। ...[8]

> इससे मानवीय मन और मानवीय व्यक्तित्व पर दुष्ट द्वारा लाए जाने वाले संताप का [पता चलता है]। ... जब लोग बार-बार अपनी वासनाओं, लोभ और बड़ाई की इच्छा करके, परमेश्वर और उसके मार्ग को छोड़ देते हैं; तो उन्हें संताप झेलने पड़ते हैं, ...[9]

> यह परमेश्वर के विरुद्ध षड्यन्त्र करना चुनने वालों के जीवनों में पाप के विनाशकारी संताप की वास्तविकता का दर्शन है।[10]

यूहन्ना के पाठकों ने इसे रोमी अधिकारियों के लिए माना होगा, जो उन्हें सता रहे थे और मुझे विश्वास है कि प्रकाशितवाक्य 9:1-11 के लिखे जाने के समय पवित्र आत्मा की पापियों की सूची में रोमी साम्राज्य के अविश्वासी लोग सबसे ऊपर होंगे। रेअ समर्स ने सुझाव दिया है कि टिड्डियों की विपत्ति ''नारकीय सड़ांध अर्थात रोमी साम्राज्य के अंदरूनी पतन का प्रतीक है।''[11]

परन्तु हम इसे यूहन्ना के समय की प्रासंगिकता ही न बनाएं। पहली शताब्दी में हो या इक्कीसवीं शताब्दी में, पाप अपने आप में विनाशकारी है। ओवन क्राउच ने लिखा है कि ''अपने स्वभाव से ही पाप अपने पीड़ादायक दण्ड [ले जाता है]।''[12] जी. बी. केयर्ड ने लिखा है कि परमेश्वर ''बुराई के विनाश के लिए ही बुराई को अनुमति देता है। ... बुराई अपने आप में ही विनाशकारी है।''[13]

एक-एक प्रतीक पर चर्चा करते हुए इन बातों को अपने ध्यान में रखें। अन्तिम रूप देने के समय तस्वीर में इन्हें लगाना न भूलें।

टिड्डियां (9:1-11)

अंधकार छोड़ा गया (आयतें 1-3क)

''और जब पांचवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, तो मैंने स्वर्ग से पृथ्वी पर एक तारा गिरता हुआ देखा'' (आयत 1क)। पिछले पाठ में, आकाश से गिरा तारा (8:10) केवल एक पिघली हुई वस्तु थी; 9:1 वाला तारा स्पष्टतया *एक व्यक्ति* था, क्योंकि आयत 1ख कहती है कि ''*उसे* ... कुंजी दी गई।'' प्रकाशितवाक्य के पहले दर्शन में, यीशु ने यूहन्ना को बताया था कि उसके हाथ में सात तारे ''सातों कलीसियाओं के दूत'' (1:20) थे। शायद हमें भी लगे कि अध्याय 9 वाला तारा स्वर्गदूत है।

क्या यह तारा/स्वर्गदूत आयत 11 वाला ''अथाह कुण्ड का दूत'' ही है?[14] हो भी सकता है और नहीं भी। व्यक्तिगत रूप से मुझे आयत 1 वाले तारे/स्वर्गदूत में और अन्य स्वर्गदूतों में, जिन्हें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में विशेष कार्य दिए गए थे, कोई विशेष अन्तर दिखाई नहीं देता। कुछ लोग यह ज़ोर देते हैं कि कुंजी इस स्वर्गदूत को ''*दी गई* थी'' इसलिए वह कोई दुष्ट ही होगा; परन्तु अध्याय 8 में वेदी पर स्वर्गदूत को धूप ''दी गई थी'' (आयत 3) और टीकाकार मानते हैं कि वह स्वर्गदूत, परमेश्वर का सेवक था।

कोई विरोध करके कह सकता है, ''पर यह तो *गिराया गया* स्वर्गदूत था, इसलिए यह शैतान या उसके स्वर्गदूतों में से कोई एक होना *चाहिए*।''[15] परन्तु वचन यह नहीं कहता कि यह ''फैंका गया स्वर्गदूत'' था। फैंका गया *तारा* एक रूपक है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में तारों के पृथ्वी पर पहुंचने को ऐसे ही दिखाया गया है (6:13; 8:10)। प्रकाशितवाक्य 9:1 को पढ़ते हुए शायद हम आकाश से आती एक चमकदार आवाज़ ही समझें। चमक कम होने पर, एक स्वर्गीय जीव पृथ्वी पर खड़ा दिखाई दिया।

''और उसे अथाह कुण्ड की कुंजी दी गई'' (आयत 1ख)। कितना रंगदार वाक्यांश

है: ''अथाह कुण्ड,''![16] इन शब्दों में अनोखे रहस्य की गंध है, जो पूरी तरह से शेष आयत से मिलती है। इसलिए मुझे यह ध्यान दिलाते हुए कि ''अथाह कुण्ड'' शब्द मूल शास्त्र में नहीं, पीड़ा होती है। मूल यूनानी शास्त्र में ''अथाह कुण्ड का स्तम्भ'' है। इसमें ''अथाह कुण्ड'' कही जाने वाली एक भूमिगत गुफ़ा का रूपक है, जिसका स्तम्भ नीचे तक जाता है। स्तम्भ का सिरा बन्द और ताला लगा है और तारे/स्वर्गदूत को इसे खोलने की कुंजी दी गई है, ताकि अथाह कुण्ड के लोगों को छोड़ा जा सके।

अथाह कुण्ड के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''abyss'' यूनानी शब्द *abusso* का लिप्यंतरण है (''u'' को ''y'' लिखा जा सकता है)। यूनानी भाषा वाले पुराने नियम (सप्तति अनुवाद) में समुद्र की गहराई या पृथ्वी की गहराई के लिए ''ábyss'' का इस्तेमाल हुआ है (देखें यशायाह 51:10; उत्पत्ति 49:25)।[17] नये नियम में पौलुस ने ''abyss'' का इस्तेमाल अधोलोक के संसार के लिए किया (रोमियों 10:7[18])। लूका 8:31 में इसके लिए ''अथाह गड्ढे'' का इस्तेमाल अधोलोक के संसार के विशेष भाग के लिए किया गया है, जहां दुष्टात्माएं न्याय की प्रतीक्षा करते हुए कैद में हैं (देखें लूका 16:22, 23; 2 पतरस 2:4)।[9] स्पष्टतया प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ''अथाह कुण्ड'' का इस्तेमाल बाद वाले अर्थ में किया गया है। समुद्री जीव (13:1) ''वह पशु जो अथाह कुण्ड में से निकलेगा'' (11:7; देखें 17:8) को कहा गया है। बड़े लाल अजगर को एक हज़ार वर्ष कैद में पड़े देखने पर यह अथाह कुण्ड में ही होगा (20:1–3)।

मैं इस बात पर ज़ोर देता हूं कि अथाह कुण्ड वह ''अनन्त आग ... जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है'' *नहीं* है (मत्ती 25:41)। न यह ''आग और गंधक की झील'' है (प्रकाशितवाक्य 20:10; देखें 20:14, 15; 21:8)। यह दुष्टों का अनन्त निवास नहीं है।

मैं इस बात पर भी ज़ोर दूंगा कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अथाह कुण्ड के हवालों का अर्थ यह नहीं है कि आज्ञा न मानने वाली आत्माएं *पृथ्वी के अन्दर* कहीं कैद हैं या शैतानी जीवों को अधोलोक के संसार में जाने और वहां से आने की अनुमति है। यह *संकेत* है। पाप के खतरनाक स्वभाव और दूरगामी प्रभावों को बताने के लिए, आत्मा हमें पृथ्वी के नीचे रहने वाली भयंकर जीवों के दल की कल्पना करने और फिर यह कल्पना करने की चुनौती देता है कि उन जीवों को संसार में खुला छोड़ देने से कैसा लगेगा।

वचन में आते हुए, हम पढ़ते हैं कि स्वर्गदूत ने ''अथाह कुण्ड को खोला और कुण्ड के धुएं से सूर्य और वायु अन्धयारी हो गई'' (आयत 2)।

सात कटोरों को आगे देखते हुए, जब सातवां कटोरा उण्डेला गया, तो उस पशु के राज्य पर ''अंधेरा छा गया'' (16:10)। पांचवीं मुहर और चौथे कटोरे की सामान्य बात अंधकार है, जो यह संकेत देता है कि अंधकार का महत्व नाटकीय प्रभाव से कहीं अधिक है। टीकाकार इस बात से सहमत हैं कि धुआं पाप से उपजे मन के अंधकार का प्रतीक है (देखें 2 कुरिन्थियों 4:4; कुलुस्सियों 1:13):

> यह धोखे और भ्रम का, पाप और शोक का नैतिक अधिकार और भ्रम का धुआं है, ...[20]

> ... धुएं को शैतान का बुरा प्रभाव कहना शायद सबसे सही है, जो लोगों की समझ

को धुंधला कर देता है, ...[21]

धुएं के काले बादलों में से उस स्तम्भ के निकलने पर हम चकित होते हैं कि अन्धकार में से क्या निकलेगा। ''और उस धुएं में से पृथ्वी पर टिड्डियां निकलीं'' (आयत 3क)। टिड्डियां ? नन्हे से हरे कीड़े, शायद सबसे सही हैं, हम बरसात में खेतों में उछलते देखते हैं ? वो खटमल जिन्हें मछलियां पकड़ने के लिए छोटे लड़के अपने कांटों पर लगा लेते हैं ? जहां मैं रहता हूं वहां कोई कह सकता है, ''कितनी निराशा की बात है!'' परन्तु प्राचीन जगत में ''टिड्डियां आ रही हैं!'' निराश करने के लिए बहुत बड़ी बात थी[22]।

ये टिड्डियां वे नहीं हैं, जिन्हें हम टिड्डियां कहते हैं: ऑस्ट्रेलिया में उन गोल-मटोल हरे कीड़ों को ''रहयां'' कहा जाता है, बल्कि प्रकाशितवाक्य 9 वाली टिड्डियां वे हरे टिड्डे थे, जिन्हें मैं बचपन में पकड़ा करता था। जिन्हें मैं पकड़ता था, उनमें केवल अन्तर यही था कि उनका एंटीना लम्बा होता था और इन टिड्डियों का एंटीना छोटा है।

बाइबल में बताए गए छोटे एंटीना वाले टिड्डे/टिड्डियां जंगल में होते हैं और विशेष परिस्थितियों में वे भोजन की तलाश में हरे, जोते हुए खेत में हमला कर देते। चार मील तक चार सौ फुट तक का चौड़ा स्तम्भ बनाकर वे सौ फुट के झुंड में चलते हैं। ये बादलों में इतने घने होकर उड़ते हैं कि सूर्य का प्रकाश धुंधला हो जाता है। पृथ्वी पर आकर उन्होंने रेंगने वाले गलीचे की तरह इसे ढक लिया और रास्ते में आने वाली सारी फसल खा ली। उन्होंने पेड़ों की छाल, खेतों की फसलें और यहां तक कि कपड़े और रस्सी तक खा लिए। फिर भी उनकी भूख मिटी नहीं थी। जिस भी देश पर उन्होंने हमला किया उस देश की हर हरी वस्तु शीघ्र ही नष्ट हो गई[23]।

हमें मिस्र देश पर आने वाली आठवीं विपत्ति का ध्यान आता है (निर्गमन 10:15)। तौ भी प्रकाशितवाक्य 9 के सबसे निकट का बाइबल का हवाला योएल 1; 2 वाले टिड्डियों के झुंड का है।

मृत्यु की इच्छा की गई (आयतें 3ख-6, 10)

बाइबल के समयों में स्वाभाविक टिड्डियों से भी अधिक भयंकर प्रकाशितवाक्य 9 वाली टिड्डियां थीं। ''और उन्हें पृथ्वी के बिच्छुओं की सी शक्ति दी गई'' (आयत 3ख)। आयत 10क में ''उनकी पूंछ बिच्छुओं की सी'' बताई गई है।

बहुत बड़ी संख्या में होने के कारण टिड्डियों का भय छा गया था, परन्तु व्यक्तिगत रूप से वे हानि रहित थीं। मैं अपने हाथों पर टिड्डे बिठा लिया करता था। मेरी हथेली पर रेंगते हुए लगता कि वे थोड़ा सा काटते और कभी-कभी मेरी त्वचा को नोचते हैं, परन्तु मुझे उनसे खतरा नहीं होता था। इसके बजाय इन हानि रहित जीवों की कल्पना करें, जिनकी बिच्छू जैसी लम्बी, चाबुक सी विषैली पूंछ है! ऐसे टिड्डों से मैं तो दूर ही रहता!

स्पष्टतया ये साधारण टिड्डियां नहीं थीं क्योंकि ''उनसे कहा गया,[24] कि न पृथ्वी की घास को, न किसी हरियाली को, न किसी पेड़ को हानि पहुंचाओ'' (आयत 4क)। टिड्डियों के लिए वनस्पति सामान्य भोजन था, परन्तु प्रभु ने भोजन की उनकी सूची से पत्तों को निकाल दिया था। इसके बजाय उन्हें मनुष्यों को आहार बनाने के लिए कहा गया! उन्हें

हर मनुष्य पर हमला नहीं करना था; उन्हें ''केवल उन मनुष्यों को जिनके माथे पर परमेश्वर की मुहर नहीं है'' (आयत 4ख) हानि पहुंचानी थी।

अध्याय 7 में 1,44,000 पर मुहर का अध्ययन करते हुए हमने पाया था कि मुहर लगाने का मुख्य उद्देश्य मुहर किए हुए लोगों की सुरक्षा थी।[25] वचन का हमारा यह भाग सुरक्षा का एक उदाहरण देता है, जो परमेश्वर के लोगों को मिली है। टिड्डियां आज्ञा न मानने वालों के परिणामों को दिखाती हैं, इसलिए आज्ञा मानने वाले उन परिणामों से बच गए।

मुहर न किए हुओं की ''हानि'' की सीमा अगली आयतों में बताई गई है। आयत 5 के पहले भाग में, हमें बताया गया है कि टिड्डियों को ''मार डालने का तो नहीं, पर पांच महीने तक लोगों को पीड़ा देने का अधिकार दिया गया'' (आयत 5क; देखें आयत 10)। बाद में मनुष्य जाति के एक भाग ने *मारे* जाना था (देखें 9:20); परन्तु पांचवीं तुरही के दौरान, परमेश्वर को न मानने वाले मरे नहीं थे, बल्कि ''पांच महीनों'' के लिए *पीड़ित* हुए थे।

पहले एक पाठ में मैंने कहा था कि ''पांच'' का संकेत ''सीमित शक्ति या समय'' है।[26] कुछ लोग यह ध्यान दिलाते हैं कि पांच महीने टिड्डियों की विशेष प्रजाति का जीवन काल था और यह कि टिड्डियों की महामारी आम तौर पर प्रत्येक वर्ष पांच महीने होती थी। इस आयत में ''पांच महीनों के लिए'' शब्द सम्भवतया इस तथ्य को दृढ़ करता है कि परमेश्वर ने टिड्डियों का कार्य *सीमित* कर दिया जो इस बात का संकेत है कि यदि वह सीमित न करता तो हर गैर मसीही नष्ट हो जाता।[27]

आयत 5 के अन्तिम भाग में, हम इस विचार में वापस आते हैं कि टिड्डियों की पीड़ा ''ऐसी थी जैसे *बिच्छू* के डंक मारने से मनुष्य को होती है।'' (पृष्ठ 43 पर बिच्छू के डंक की पीड़ा का चित्र देखें।) बिच्छू प्राचीन जगत में दिए जाने वाले दण्ड में से एक था। (देखें व्यवस्थाविवरण 8:15; 1 राजाओं 12:11; यहेजकेल 2:6; लूका 10:19; 11:12.)

बिच्छू चट्टानों या दरारों में छिपता है। अपने छिपने के स्थान से वह झपटकर अपने शिकार को अपनी चिमटी से पकड़ लेता है। फिर उसकी डंक वाली पूंछ आगे को बढ़कर अपने शिकार के शरीर में ज़हर डाल देती है। छोटे जीव उस ज़हर से मर जाते या लकवाग्रस्त हो जाते हैं। मनुष्यों के लिए यह डंक इतना घातक नहीं होता,[28] परन्तु पीड़ादायक जरूर होता है।

बाइबल वाले देशों में मैंने कभी बड़े आकार का बिच्छू नहीं सुना, पर एक बार ओक्लाहोमा के बिच्छू को मैंने निकट से देखा था। हाई स्कूल से पढ़ाई पूरी करने के तुरन्त बाद मैं दूध बेचने वाले एक किसान के साथ काम किया करता था। मैं उसके द्वारा लिए किराए के मकान में रहता था। वह मकान कुछ समय से खाली पड़ा था और उसमें कई बिच्छुओं ने डेरा जमा लिया था। मैं दूध दोहने में उसकी सहायता करने के लिए एक दिन सुबह-सुबह बिस्तर से उठ गया तो एक बिच्छू मेरे पांव के नीचे आ गया। हां, इसका डंक *पीड़ादायक* है। परन्तु कुछ सीमा तक मैं अगली आयत की भावना को समझ सकता हूं: ''उन दिनों में मनुष्य मृत्यु को ढूंढ़ेंगे, और न पाएंगे और मरने की लालसा करेंगे और मृत्यु उन से भागेगी'' (आयत 6)।[29]

टीकाकार इस बात से परेशान होते हैं कि इन लोगों को मृत्यु क्यों नहीं मिली यानी

उन्होंने आत्महत्या क्यों नहीं की। याद रखें कि यह अतिश्योक्तिपूर्ण, अर्थात सांकेतिक भाषा है और इसका अर्थ ज्यों का त्यों नहीं लिया जाना चाहिए। कई बार हम में से कई लोग इतने बीमार हुए हैं कि हमें लगा कि मृत्यु आ जाए तो बेहतर होगा; तौ भी हम मरे नहीं, परन्तु हमें उस पीड़ा को सहना पड़ा। आयत 6 यही तो कहती है। दुष्ट लोगों को तब तक शांति नहीं मिल सकती, जब तक वे अपनी अपश्चात्तापी स्थिति में रहते हैं।[30]

आयत 6 का मुख्य बल यह है कि पापी के लिए इस जीवन में पीड़ा, अर्थात ऐसा कष्ट है, जिसके लिए पश्चात्ताप करके परमेश्वर के पास जाए बिना चैन नहीं है। कइयों के लिए इसमें विवेक की पीड़ा भी है। रोमियों 7 अध्याय में पौलुस ने दोषी विवेक की पीड़ा को बताया है। यह कहने के बाद कि ''क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझ में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती,'' उसने अपने आप को पाप का ''बंदी'' बताया और अन्त में पुकारा, ''मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे ... कौन छुड़ाएगा?'' (रोमियों 7:17-24)।[31]

ओवन क्राउच ने लिखा है, ''दोष का बोझ, विवेक का क्लेश, याद आने वाले झूठों की पीड़ा, व्यभिचारपूर्ण धोखे का बहता पीक भरा घड़ा, मन की न खत्म होने वाली बेचैनी जीवन को नरक बना देती है।''[32] ऐसी पीड़ा पर विचार करते हुए मुझे यहूदा की पीड़ा का ध्यान आता है, जब उसे यीशु को पकड़वाने के अपने काम का अहसास हुआ था। विवेक की पीड़ा के दुखद परिणामों को देखना हो तो भरी दोपहर में एक रस्सी से यहूदा का फंदा लगाकर लटकना देखें (देखें मत्ती 27:5; प्रेरितों 1:16-18)।

निश्चय ही कुछ लोग अपने विवेक को कठोर कर लेते हैं, परन्तु उन्हें भी परमेश्वर से अलग रहने के परिणाम भुगतने पड़ेंगे। संसार की पेशकश को पाने और परमेश्वर को नज़रअन्दाज़ करने का सुलैमान एक उदाहरण है।[33] सभोपदेशक दिखाता है कि जब सुलैमान ने वह सब सीखने के लिए, जो सीखा जा सकता है ''अपना मन लगाया'' (1:13), तो उसने पाया कि ''जो अपना ज्ञान बढ़ाता है वह अपना दुख भी बढ़ाता है'' (1:18)। अपने आप को आनन्द के लिए देकर, अन्ततः उसने कहा, ''उससे क्या प्राप्त होता है?'' (2:1, 2)। बड़ी-बड़ी प्राप्तियों के बाद उसने लिखा कि ''सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है, और संसार में कोई लाभ नहीं'' (2:11)। बहुत सम्पत्ति जमा करने के बाद उसने निष्कर्ष निकाला कि ''जो रुपए से प्रीति रखता है वह रुपए से तृप्त न होगा और न जो बहुत धन से प्रीति रखता है, लाभ से'' (5:10)।

सैकड़ों आधुनिक उदाहरण ध्यान में आते हैं: अपना जीवन धन जोड़ने में लगा देने वालों ने अन्त में पाया कि धन से संतुष्टि नहीं मिल सकती ... जिन्हें संसार के लोगों द्वारा सफल माना गया, उनका अन्त दुर्दशा और मोह भंग से हुआ ... जिन्होंने अपने आप को मनुष्यों और परमेश्वर के नियमों से ऊपर माना था अन्त में इस बात की कठोर वास्तविकता को पाया कि ''विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है'' (नीतिवचन 13:15ख)।

पाप के परिणामों में अपने प्रियों से अलग होना, मन और देह का भ्रष्ट होना, भावना का निराश होना कि जीवन नियन्त्रण से बाहर है, व्यर्थ भावना कि ''सब कुछ यहीं है,'' मन में भरने वाली कड़वाहट, न्याय के रास्ते में आने वाला संदेह, विपत्ति आने पर मन को खा

जाने वाला आतंक और व्यर्थ जीवन की त्रासदी। इसमें और बातें भी जोड़ी जा सकती हैं।

पापपूर्ण जीवन के ये *स्वाभाविक* परिणाम हैं। ''*अपने* पापों के लिए हमें इस जीवन में इतना दण्ड नहीं मिलता, जितना अपने पापों *से* ।''[34] लियोन मौरिस ने लिखा है कि ''परमेश्वर घटनाओं को उनके क्रम में होने देता है और पापियों को निश्चय ही दण्ड दिया जाएगा।''[35] ब्रूस मैज़गर ने टिप्पणी की है:

> परमेश्वर अकाल और मृत्यु की स्वीकृति नहीं देता ... , परन्तु यदि लोग परमेश्वर के नियम का विरोध करते हैं तो इनका होना अवश्य है। ... चोटी से उतरने के भौतिक नियमों का पालन न करें, तो विनाश निश्चित है। नैतिक नियमों का पालन न करें तो उसमें भी विनाश पक्का है। दिए गए दुख ... परमेश्वर की आज्ञा को गम्भीरतापूर्वक न लेने का परिणाम हैं। ... परमेश्वर वह दुख नहीं देना चाहता, पर जब तक हम स्वतन्त्र जीव हैं परमेश्वर आने की उन्हें अनुमति देता है।[36]

विनाश का वर्णन (आयत 7-10)

अभी तक यूहन्ना ने ऐसी पीड़ा के योग्य जीवों का विवरण नहीं दिया था। 7 से 10 आयतों में उसने इसका उपाय कर लिया। (दर्शन वाली एक टिड्डी का चित्र देख।)एक बार फिर हमें ध्यान रखना है कि विवरणों पर इतना ज़ोर न दें कि इन भयानक आकृतियों के पूरे प्रभाव उपेक्षित हो जाएं। चार्ल्स रायरी ने टिप्पणी की है, ''इस अध्याय में बाइबल के किसी भी अन्य अध्याय की तुलना में 'सा' और 'जैसे' शब्द अधिक हैं, जिससे पता चलता है कि यूहन्ना के लिए दर्शन में देखे गए दृश्य का वर्णन करना कितना कठिन है।''[37]

ब्रायन वाट्स और मुझे शैतानी टिड्डियों की एक तस्वीर पर काम करते हुए ऐसी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। टिड्डियों की अधिकतर कलात्मक प्रस्तुतियों में विवरणों पर इतना अधिक बल है कि टिड्डी की परछाईं भी नहीं मिलती। कई बार रुकने और आरम्भ करने के बाद, ब्रायन का यह अन्तिम प्रयास है।

यूहन्ना ने यह कहते हुए अपने विवरण का आरम्भ किया कि ''उन टिड्डियों के आकार लड़ाई के लिए तैयार किए हुए घोड़ों के से थे'' (आयत 7क) ।[38] यदि आप में बहुत स्पष्ट कल्पना शक्ति है तो आप स्वाभाविक टिड्डी और घोड़े में कुछ समानता देख सकते हैं। जर्मन भाषा में टिड्डी को *heupferd* या ''hay-horse'' अर्थात ''घास खाने वाला घोड़ा'' कहा जाता है। इटली की भाषा में इसे *cavalletta* कहा जाता है, जिसका अर्थ ''नन्हा घोड़ा'' है। यूहन्ना ने कहा कि विशेषकर उसके ''... आकार *लड़ाई के लिए तैयार* हुए घोड़ों जैसे थे'' (आयत 7क, ख)। यह टिड्डियों की झिलम के लिए कहा गया हो सकता है (आयत 9) या हो सकता है कि इसका अर्थ केवल यही हो कि वे लड़ने को उतावले थे।

फिर यूहन्ना ने यह विवरण जोड़ा कि ''उनके सिरों पर मानो सोने के मुकुट थे'' (आयत 7ग)। ''मुकुट'' यूनानी शब्द *stephanos* का अनुवाद है, जिसे ''विजय'' के लिए इस्तेमाल किया जाता है।[39] ये टिड्डियां अपने पीड़ादायक मिशन (एक निराशाजनक विचार) को सफलतापूर्वक पूरा करने वाली थीं। निश्चय ही उन्हें मिलने वाली कोई भी

विजय केवल अस्थाई ही होनी थी; वास्तव में ये विजय के मुकुट नहीं, बल्कि केवल ''सोने के मुकुटों *जैसा कुछ* '' था (NIV)।

अगली विशेषता सबसे महत्वपूर्ण हो सकती है: ''और उनके मुंह मनुष्यों के से थे'' (आयत 7घ)। अध्याय 4 का अध्ययन करते हुए हमने देखा था कि चार जीवित प्राणियों में से तीसरे का ''मुंह मनुष्य का सा है'' (4:7) और निष्कर्ष निकाला था कि इससे बुद्धिमता या चतुराई का संकेत मिल सकता है। यहां शायद ऐसा ही विचार व्यक्त किया गया है। ''आगे बढ़ रहे झुण्ड के सामने सीधे देखने पर यूहन्ना को पशु जगत की सुस्त अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि शैतानी [मानवीय] जीवों की अत्यधिक बुद्धिमतापूर्ण धूर्तता और क्रूरता दिखाई दी।''[40] हर हाल में यह महत्वपूर्ण लगता है कि ''अप्राकृतिक और राक्षसी आकृति में मनुष्य और पशु को मिलाया गया है।''[41] केयर्ड ने लिखा है, ''बुराई कई डरावने रूप धारण कर सकती है ... ; परन्तु अन्तिम विश्लेषण में इसे मनुष्य का मुंह लगा है, ...''[42]

इन जन्तुओं के ''बाल स्त्रियों के से'' भी थे (आयत 8क)। ये बाल शायद सिर पर थे; शायद इनसे पूरा तन ढका हुआ था। इस विवरण में केवल एक और अनियमितता थी[43]।

''और दांत सिंहों के से थे'' (आयत 8ख)। इस मामले में दांतों का इस्तेमाल काटने के लिए नहीं किया गया था;[44] बल्कि आकृति में लहू के प्यासे स्वभाव वाले विशालकाय जीवों पर बल दिया गया है।

''और वे लोहे की सी झिलम पहिने थे'' (आयत 9क)। टिड्डियां अजेय लग रही थीं। यह टिड्डी के स्वाभाविक तन को कहा गया हो सकता है या शायद टिड्डियों को युद्ध के घोड़ों के विशेष हथियार दिए गए थे। ब्रायन द्वारा दिए गए चित्र पर ध्यान दें और देखें कि उसमें झिलम को कहां लगाया गया है।

''और उनके पंखों का शब्द ऐसा था जैसा रथों और बहुत से घोड़ों का, जो लड़ाई में दौड़ते हों'' (आयत 9ख)। जिन्होंने टिड्डियों की महामारी देखी है, उन्होंने इस आवाज़ को बड़े झरने, घास के एक बड़े मैदान को आग लगने या वृक्षों पर भारी वर्षा होने से मिलाया है। यूहन्ना द्वारा इस्तेमाल किए गए विवरणात्मक शब्द टिड्डियों के घातक उद्देश्य से सम्बन्धित हैं।

अगुआ (9:11)

टिड्डियों के बारे में यूहन्ना ने एक और टिप्पणी अर्थात इसकी प्रासंगिकताओं की जानकारी देनी थी कि ''उन पर राजा था'' (आयत 11ख)। स्वाभाविक ''टिड्डियों के राजा नहीं होता'' (नीतिवचन 30:27), परन्तु प्रकाशितवाक्य 9 वाली टिड्डियों का राजा था। इसलिए उनके आक्रमण योजनाबद्ध ढंग से किए जा सकते थे। इस कारण उनके द्वारा दी गई पीड़ा विशेषकर प्रभावकारी और विनाशकारी होनी थी।

उनका राजा ''अथाह कुण्ड का दूत'' था (आयत 11क)। जैसा कि पहले बताया गया था शायद यह आकाश से गिरा तारा था; शायद यह कोई और जीव था। महत्व इसके नाम का ही है: ''उसका *नाम* इब्रानी में अबद्दोन, और यूनानी में अपुल्लयोन है'' (आयत 11ग)। ''इन दोनों शब्दों का अर्थ लगभग एक ही है, स्पष्ट तौर पर 'अबद्दोन' का अर्थ

'विनाश' और 'अपुल्लयोन' का अर्थ 'विनाश करने वाला' है।''[45]

बहुत से लोग यह मानते हैं कि यह शैतान है और हो भी सकता है। यीशु ने शैतान (या उसके सहकर्मियों में से एक) की ही बात की, जब उसने कहा, ''चोर किसी और काम के लिए नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने *और नष्ट करने को* आता है'' (यूहन्ना 10:10क)। परन्तु प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में जब यूहन्ना के कहने का अर्थ शैतान था तो उसने साफ़-साफ़ कहा (2:9, 10, 13, 24; 3:9)। पुस्तक में आगे प्रेरित ने शैतान के लिए प्रतीक का इस्तेमाल करने पर हमारे लिए उस प्रतीक की व्याख्या की है (12:9, 12; 20:2, 7, 10)।

वास्तव में अबद्दोन/अपुल्लयोन की पहचान की कई सम्भावनाएं हैं। उदाहरण के लिए ''अबद्दोन'' ''शियोल या *Hades (अधोलोक)* विश्वव्यापी कब्रिस्तान, मृत्यु का देश, अंधकार, खामोशी और गुमनामी, जीवन और आशा का विनाश करने वाले के पर्यायवाची के रूप में पुराने नियम में छह बार आता है।''[46] आयत 11 में शायद ''अबद्दोन'' चौथे घुड़सवार और उसके हमवतन अर्थात मृत्यु और अधोलोक को कहने का एक और ढंग है (6:8)।

अबद्दोन भलाई या बुराई किसी का भी एक और स्वर्गदूत हो सकता है, जिसे परमेश्वर द्वारा सेवा में डाला गया है। हर दर्शन की तरह, इन आयतों में भी बल बार-बार इसी बात पर है कि नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है।

कुछ लेखक ''अपुल्लयोन'' और ''अपोलो'' नामों में समानताओं की ओर ध्यान दिलाते हैं और मानते हैं कि यूहन्ना डोमिशियन की चालाकी की बात कर रहा था, जिसने यूनानी देवता अपोलो का अवतार होने का दावा किया था। ''यदि यूहन्ना के ध्यान में यह था तो पांचवीं तुरही का उसका अन्तिम शब्द विडम्बना का बहुत बड़ा प्रहार था यानी नरक की विनाशकारी सेना का राजा रोम का सम्राट था!''[47]

टिड्डियों और ''विनाश'' नामक अगुवे में स्पष्ट सम्बन्ध को आमतौर पर नज़रअन्दाज़ कर दिया जाता है: ''प्राचीन इब्रानी लोग टिड्डियों के कई अलग-अलग नाम बताते थे।[48] इनमें से प्रत्येक नाम *विनाश* को दर्शाता था।''[49] टिड्डियों के राजा को ''विनाश'' कहना पवित्र आत्मा के इस बात पर बल देने का एक ढंग हो सकता है कि उन नारकीय जीवों का अन्तिम उद्देश्य *विनाश* ही था।

''अबद्दोन/अपुल्लयोन'' जो भी हों, इसका इतना महत्व नहीं है। महत्व यह समझने का है कि पाप, जिससे मन न फिराया जाए *विनाश का कारण* बनता है, यह विनाश देह, मन और प्राण का हो सकता है। इससे उस दर्शन का सार मिल जाता है। पापी पर पाप के प्रभाव का परमेश्वर का वचन यही है।

सारांश

संसार कहता है कि पाप थोड़ा बहुत हानि रहित है और वास्तव में इससे जीवन की गुणवत्ता बढ़ती है। इसके खण्डन में परमेश्वर कहता है, ''यदि जानना हो कि पाप क्या करता है, तो देखो और समझो''-और फिर वह अथाह कुण्ड के हमलावर जीवों की भयानक तस्वीर दिखाता है। परमेश्वर के संदेश की भावना को समझने के लिए एक पल के लिए अपने आप को इस दर्शन*में*

रखें। अपने आप को परमेश्वर के प्रस्तावों को नकारने वाले पुरुष या स्त्री होने की कल्पना करें।

आप एक हरे मैदान में से जा रहे हैं, ऊपर आकाश नीला है, और सूरज आपकी पीठ को गरमाहट दे रहा है। बिना किसी चेतावनी के आपके पैरों में एक बड़ा गड्ढा हो जाता है और उसमें से नीले काले रंग का धुआं निकलने लगता है, जिससे सूरज धुंधला हो जाता है और आपका संसार अंधकारमय हो जाता है। एक आंधी, एवं गूंज सुनाई देती है जो इतनी तेज़ हो जाती है कि आपको लगता है कि आपके कान फट जाएंगे। अचानक हवा में से काले डरावने, शैतानी जीव आपके आस-पास मंडराने लगते हैं।

वे विशालकाय टिड्डियों जैसे हैं, परन्तु पृथ्वी पर ऐसी टिड्डी पहले कभी देखी नहीं गई। वे बिच्छुओं की तरह हथियारबन्द, घोड़ों के आकार के और राजाओं जैसे मुकुट पहने हुए हैं। उनके मुंह पुरुषों के, बाल स्त्रियों के और दांत सिंहों के हैं। वे झिलम पहने और पंख लगे हुए हैं और बहरा करने वाले शोर के साथ कभी इधर कभी उधर जाते हैं[9]।

इससे भी परेशान करने वाली बात यह है कि उन्होंने क्षेत्र की हरी-भरी वनस्पति की परवाह नहीं की और आपके और निकट आते जा रहे हैं। मनुष्यों जैसे उनके चेहरे अपवित्र ख्याल की अभिव्यक्ति हैं। आपके माथे पर पसीना आने लगता है। आपके मन में ऐसा महसूस होता है जैसे यह उछलकर आपकी छाती से बाहर आ जाएगा। कभी आप इधर और कभी उधर जाते हैं, परन्तु आप तो घिर चुके हैं। बचाव का कोई रास्ता नहीं है।

उन जीवों में से एक आगे बढ़कर अपनी विषैली पूंछ से आप पर झपटता है। आप पीड़ा से कराहते हैं। आप अपने शरीर के हर भाग में अपनी नसों में से ज़हर फैलने को महसूस कर सकते हैं। फिर एक और टिड्डी हमला करती है और फिर एक और। आप अपने घुटनों पर गिर जाते हैं। शीघ्र ही वे अपने डंक से आपकी भुजाओं, आपके हाथों, आपकी टांगों, आपके पांवों, आपके धड़, आपकी गर्दन, आपके सिर, आपके मुंह पर वार करते हैं। कुलबुलाते, पीड़ा देते उनके बोझ से आप बेहोश होकर गिर जाते हैं।

भूमि पर छटपटाते हुए लेटकर, आप की देह पीड़ा से तड़प रही है, आपके दिमाग में थोड़े बहुत शब्द आ रहे हैं: ''पाप की मज़दूरी मृत्यु है'' (रोमियों 6:23क)।

परमेश्वर ने हमें बताना चाहा था *कि* पाप पापी के लिए क्या करता है!

वह हमें यह क्यों बताना चाहता है? वह हमें केवल डराना ही नहीं चाहता, बल्कि हमें अपने पापों से मुड़कर उसके पास लौटने के लिए प्रेरित करना चाहता है। योएल के टिड्डियों वाले दर्शन के बाद मन फिराव की एक पुकार थी:

> तौ भी यहोवा की यह वाणी है, अभी भी सुनो, उपवास के साथ रोते-पीटते अपने पूरे मन से फिरकर मेरे पास आओ। ... अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो; क्योंकि वह अनुग्रहकारी, दयालु, विलम्ब से क्रोध करने वाला, करुणानिधान और दु:ख देकर पछताने हारा है (योएल 2:12, 13)।

यूहन्ना के समय में परमेश्वर की चेतावनी पाने वालों ने नहीं सुना था (प्रकाशितवाक्य 9:20), परन्तु मेरी प्रार्थना है कि आप अवश्य सुनें। यदि आपने बपतिस्मा नहीं लिया या

[illegible] आज ही आ जाएं [31]

टिप्पणियां

[illegible] कार्ल मैनिंगर, व्हटएवर हेपंड टू सिन? [illegible] 1973)। जिम्मी एलन, ''व्ट इज़ हेल लाइक?'' एण्ड अदर सरमन्स [illegible] 33-40. रूज़ल बैली, द [illegible] राबर्ट माउंस, द बुक ऑफ रैवलेशन [illegible] फाउंडेशन, 1988), 60. जिम मैकगुइगन द बुक [illegible] 102. [illegible] ऑफ रैवलेशन, लूकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ [illegible] 1976), 94. [illegible] ऐतिहासिक ढंग पर जानकारी के लिए, ट्रुथ फ़ॉर टुडे [illegible] 33 [illegible] देखें)। [illegible] के राज्य की शिक्षा की जानकारी के लिए, ट्रुथ फ़ॉर टुडे [illegible] 38 [illegible] 30 [illegible] होमेर हेली, [illegible] तक देखें)। फ्रैंक पैक, रैवलेशन [illegible] 1979), 233. एम. राबर्ट मुलहोलैंड जूनियर, [illegible] फ्रांसिस 1965), 77-73. [illegible]

1990), 196.

रेअ समर्स, वर्थी इज़ द लैंब (नैशविल्लेः ब्रॉडमैन प्रैस 1951), 138. ओबन एल क्राउच, [illegible] एक्सपोज़िट्री प्रीचिंग एण्ड टीचिंग: रैवलेशन [illegible] जी. बी. केयर्ड, ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन आफ सेंट जान द डिवाइन [illegible] 1966), 118, 120. [illegible] ट्रुथ फ़ॉर [illegible] NAS3 में ''the abyss'' ''गड्हा'' है। सप्तति अनुवाद में इब्रानी शब्द tehom का अनुवाद ''abyss'' हुआ है। हमारे बाइबलों के पुराने नियमों में tehom [illegible] लूका 8:31 और रोमियों 10:7 में KJV [illegible] अधोलोक के संसार के बारे में ट्रुथ फ़ॉर टुडे [illegible] नोट्स देखें। विलियम हैंड्रिक्सन, मोर दैन कंकरर्स [illegible] पुलपिट कमैंट्री, अंक 22, [illegible] संपा. एच.डी.एम [illegible] 393 [illegible] में [illegible] इस पद का प्रतीक है (देखें व्यवस्थाविवरण 28:42; KJV [illegible]। अधिकतर भाग मैरिल सी. टैनी, [illegible]

बेकर बुक हाउस, 1963), 46 से लिया गया था। [24]वचन यह नहीं कहता है कि वास्तव में आज्ञा किसने दी, परन्तु यह हमें समझना है कि यह परमेश्वर की ओर से था। [25]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''तूफ़ान के बीच की शांति'' में 1,44,000 पर मुहर किए जाने पर विचार करें। [26]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''यहां अजगर होंगे!'' में संख्या ''पांच'' पर टिप्पणियां देखें। [27]इसके अलावा कुछ लोगों को यह संकेत लगता है कि परमेश्वर का धीरज जवाब देने से पहले लोगों के लिए मन फिराने का *सीमित समय* है। [28]अपवादों में बुज़ुर्ग, बहुत छोटे बच्चे और हृदय के रोग वाले लोग हो सकते हैं। [29]पुराने नियम की ऐसी ही अभिव्यक्तियों के लिए देखें योएल 3:21; यिर्मयाह 8:3. [30]इस आयत के और अक्षरश: पक्ष के इच्छुक लोग, इस पर विचार करें: आत्मिक कष्ट शारीरिक मृत्यु से खत्म नहीं हो जाता। मृत्यु के पश्चात पापी धनवान व्यक्ति ने ''अधोलोक में पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं'' (लूका 16:23)। जब कोई व्यक्ति मसीह के बाहर रहकर मर जाता है, तो मृत्यु के बाद की पीड़ा निश्चित रूप से इस जीवन में सही गई पीड़ा से बढ़कर होगी।

[31]सही काम करने के प्रयास में असफल रहने वाले व्यक्ति के लिए पौलुस की पुकार, जबकि आज बहुत से पापी वह करने की कोशिश *नहीं* कर रहे जो उन्हें करना चाहिए। तौ भी पौलुस द्वारा व्यक्त की गई विवेक की पीड़ा हर जगह है। [32]क्राउच, 167. [33]सभोपदेशक की पृष्ठ भूमि के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* के (जून 1993 का अंग्रेज़ी अंक) में पृष्ठ 38 और 39 में ''ए सर्वे ऑफ़ ओल्ड टैस्टामेंट'' देखें। [34]ऐलन, 33. [35]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 100. [36]ब्रूस एम. मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1993), 58. [37]चार्ल्स कैल्डवैल राइरी, *रैवलेशन* (शिकागो, इलिनोइस: मूडी प्रैस, 1968), 61. [38]प्रकाशितवाक्य 9 वाली टिड्डियों की तुलना योएल 1; 2 वाली टिड्डियों से करें। आपको विवरण के कुछ शब्द वही और कुछ अलग मिलेंगे। दोनों में एक बात समान यह है कि दोनों की तुलना घोड़ों से की गई थी (योएल 2:4)। योएल की भविष्यवाणी वाली टिड्डियों में अन्तर यह है कि वे टिड्डियां *बादल* थीं (योएल 2:2) जबकि प्रकाशितक्वाक्य 9 वाली टिड्डियां बादल *में से निकली* थीं। [39]मुकुटों के सम्बन्ध में *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''निर्धन कलीसिया जो धनी थी'' और ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में देखें। [40]माउंस, 196.

[41]वही। [42]केयर्ड, 120. [43]कुछ लोगों को टिड्डियों के स्त्री के लहराते हुए बाल होने की बात में कामुकता दिखाई देती है, परन्तु मेरी दृष्टि से ऐसे प्राणी के बाल होना कामुकता का नहीं, बल्कि भद्देपन का प्रतीक है। लम्बे, लहराते हुए बालों वाले ''पाप जैसे भद्दे'' आदमी का विचार करें। इस विवरण की कोई बात मुझे आकर्षित नहीं करती! [44]उस प्राणी का हथियार सिंह के दांत नहीं, बल्कि बिच्छू की पूंछ थी। [45]टी. एफ. गलेसन, द *रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* द कैंब्रिज बाइबल कमैंट्री ऑन द न्यू इंग्लिश बाइबल सीरीज़ (कैंब्रिज: कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1965), 60. [46]केयर्ड, 120. [47]जी. आर. बिसले-मुर्रे, द *बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू सैंचरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1974), 162-63. अपोलो के समुदाय में अन्य कीड़ों के प्रतीकों के साथ टिड्डी का संकेत इस्तेमाल होता था। [48]उदाहरण के लिए देखें, योएल 1:4. [49]कार्ल डी. डंकन की द *वर्ल्ड बुक इन्साइक्लोपीडिया,* 1962 संस्क., एस. वी. ''ग्रासहापर्स।'' [50]यह पद्य, माइकल विल्कॉक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज आफ़ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रो, इलिनोइस, इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 97 से लिया गया था।

[51]यदि इसे प्रवचन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है तो बपतिस्मा लेने (प्रेरितों 2:38) या घर वापसी (गलातियों 6:1; याकूब 5:16) का महत्व समझाएं।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. पाप क्या है ? धार्मिक क्षेत्रों के बाहर क्या आज ''पाप'' शब्द का इस्तेमाल होता है ? आपको क्यों लगता है कि ऐसा क्यों होता है ?
2. पाप हमें ''बाहरी, अन्दरूनी, और अनन्तकालिक'' हानि कैसे पहुंचाता है ?
3. योएल 2 वाली टिड्डियों की तुलना प्रकाशितवाक्य 9 वाली टिड्डियों से करें। उनमें समानता कैसे है ? वे किस प्रकार एक-दूसरे से अलग हैं ?
4. इस पाठ का लेखक इस विचार को क्यों नकारता है कि टिड्डियां कोबरा हैलीकॉप्टर हैं ?
5. पाठ में ''पाप के पीड़ादायक स्वभाव'' की बात है और कहा गया है कि ''पाप अपने आप में विनाशकारी है।'' आप इससे सहमत हैं या असहमत ?
6. आपको क्या लगता है कि आकाश से गिरने वाला तारा किस का प्रतिनिधित्व करता है ?
7. ''गड्हा'' क्या है ? क्या यह आग और गंधक से जलने वाली झील (अन्य शब्दों में, नरक) है ?
8. आपको क्या लगता है कि धुआं (और इससे होने वाला अंधकार) किस बात को दिखाता है ?
9. ''टिड्डियां आ रही हैं!'' चेतावनी प्राचीन जगत के लोगों के लिए इतनी डरावनी क्यों थी ? क्या टिड्डियां आज भी महामारी लाती हैं ?
10. क्या प्रकाशितवाक्य वाली टिड्डियां साधारण, स्वाभाविक और वास्तविक टिड्डियां थीं ? आप ऐसा क्यों कहते हैं ?
11. मुहर लगे लोगों को टिड्डियां कोई हानि क्यों न पहुंचा पाईं ? (इस बात का उत्तर देने के लिए तैयार रहें कि मुहर लगे लोग कौन थे।)
12. ''पांच महीने'' वाक्यांश का क्या सम्भावित महत्व है ?
13. आपने कभी बिच्छू देखा है ? क्या आपको बिच्छू ने कभी काटा है ? क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं, जिसे बिच्छू ने काटा हो ? इस बारे में बताएं।
14. आपको क्या लगता है, वचन क्या कहता है कि पीड़ित होने वाले लोगों को मृत्यु नहीं मिली ?
15. पापपूर्ण जीवन शैली के कुछ परिणाम क्या हैं ?
16. यूहन्ना के विवरण की टिड्डियों और उनमें से प्रत्येक के सम्भावित महत्व को बताएं।
17. ''अबद्दोन'' और ''अपुल्लयोन'' नामों का क्या अर्थ है ? यह व्यक्ति के पाप के प्रभाव को कैसे संक्षिप्त करता है ?
18. विस्तारपूर्वक अध्ययन करने के बाद, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दर्शन *का पूर्ण* प्रभाव रहता है। टिड्डियों के लिए *आपका* कुल प्रभाव क्या है ? क्या *आप* चाहेंगे कि वे आप पर आक्रमण करें ? हम ऐसी पीड़ा से कैसे बच सकते हैं ?

अथाह कुण्ड से टिड्डियां (9:1-11)

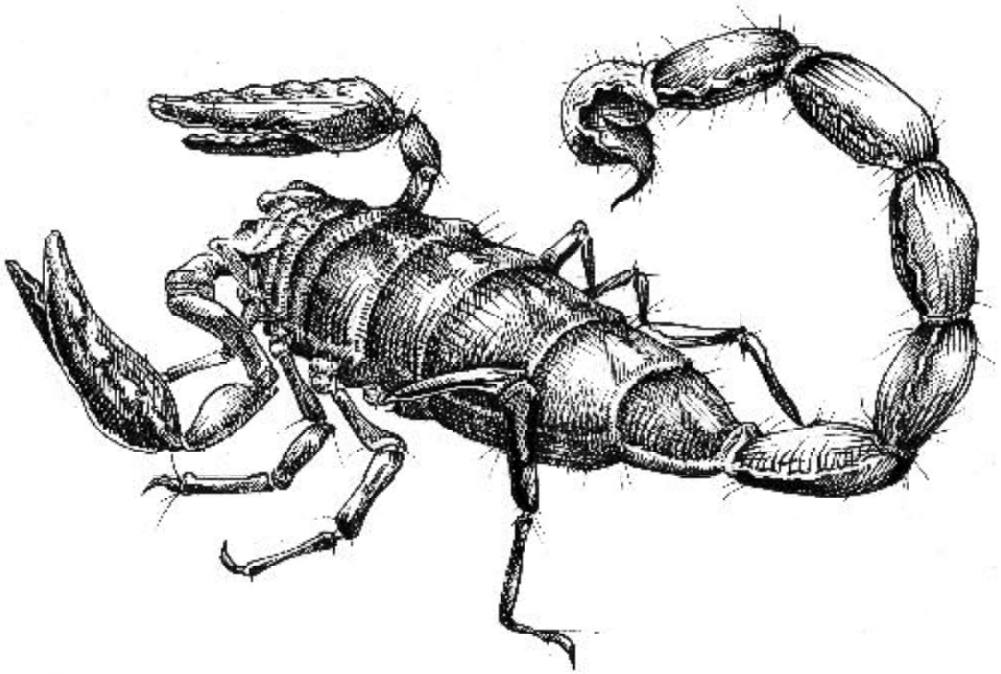

बिच्छू के डंक की पीड़ा (9:5)

दर्शन वाली एक टिड्डी (9:3, 7)